धनवन्तरी जयन्ती 06 नवम्बर

धनवन्तरी शक्तिमय आरोग्य लक्ष्मी दीक्षा

धनवन्तरी प्रदोष पर्व पूजा साधना दीक्षा मुहुर्त दिन 10:16AM से सायं 09:53PM तक

स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी संपदा है। धन, वैभव और सुख तभी सार्थक हैं, जब मनुष्य उनका आनंद स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन और संतुलित जीवन के साथ ले सके। धन त्रयोदशी केवल धन प्राप्ति का पर्व नहीं, बल्कि आरोग्य, आयु, समृद्धि और संतुलित जीवन की मंगलकामना रुपी आरोग्य लक्ष्मी का पर्व है।

आरोग्य लक्ष्मी की स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन, शतायु जीवन, रस-वीर्य-ओज, ऊर्जा शक्ति के रूप में आराधना की जाती है। जिस घर में स्वास्थ्य, संतुलन, सदभाव, परिश्रम और सकारात्मक विचार होते हैं, वहाँ वास्तविक समृद्धि का निर्माण होता है। धनवन्तरी की पूजा-साधना सम्पन्न करने से शरीर और स्वास्थ्य में वृद्धि के भाव-चिन्तन का उदय होता है जबकि लक्ष्मी पूजन से जीवन में संतुलन और समृद्धि के भाव-चिन्तन की वृद्धि होती है।

धनत्रयोदशी, आरोग्य और समृद्धि के संतुलन का पर्व भी है। यदि धन है लेकिन स्वास्थ्य नहीं, तो समृद्धि अधूरी है। यदि स्वास्थ्य है लेकिन संसाधनों का अभाव है, तो अनेक कठिनाइयाँ बनेंगी ही। इसलिये संतुलित जीवन हेतु धर्म, अर्थ, काम युक्त मोक्षदा की कल्पना की गयी है। धनवन्तरी शक्ति और आरोग्य लक्ष्मी जीवन की दो महत्वपूर्ण शक्तियों(आरोग्य और ऐश्वर्य) के संतुलन की प्रतीक है। धन्वंतरी शक्तिमय आरोग्य लक्ष्मी दीक्षा उक्त सुस्थितियों के साथ शरीर में जीवनशक्ति, मन में संतुलन, बुद्धि में स्पष्टता और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा युक्त निरोगमय समृद्धि को जागृत करने का माध्यम है।

धनवन्तरी शक्तिमय आरोग्य लक्ष्मी दीक्षा न्यौ. ₹1800

रूप चतुर्दशी 08 नवम्बर

शारीरिक आंतरिक आकर्षण वृद्धि रूपोज्जवला दीक्षा

रूप सौन्दर्य चतुर्दशी पर्व पूजा साधना दीक्षा मुहुर्त 07 नवम्बर सायं 06:32PM से 08 नवम्बर दिन 11:53AM तक

रूप केवल दर्पण में दिखाई देने वाला सौन्दर्य नहीं होता अपितु मन, विचार, आचरण और चेतना में प्रकाशित होने वाला तेज है। सौन्दर्य केवल दो ही प्रकार का होता है- बाह्य सौन्दर्य और आन्तरिक सौन्दर्य।

बाह्य सौन्दर्य विशेषकर चेहरे की आभा, शरीर की स्वस्थता, स्वच्छता, पहनावा, व्यक्तित्व की प्रस्तुति, हाव-भाव और शारीरिक आकर्षण इसके प्रमुख आयाम हैं। यह परिवर्तनशील और नश्वर है।

किसी व्यक्ति का मन कितना निर्मल है, व्यवहार कितना करुणामय है, वह सत्य और धर्म के प्रति कितना प्रतिबद्ध है, दूसरों के सुख-दुःख को कितना समझता है, उसमें कितना संयम, क्षमा, प्रेम और विनम्रता है—ये सभी उसके आन्तरिक सौन्दर्य के संकेत हैं।

श्रृंगार में मंगल, उत्सव, सौभाग्य और जीवन की रचनात्मक ऊर्जा के भाव भी जुड़े रहे हैं। वास्तविक सौन्दर्य तुलना नहीं है, सौन्दर्य प्रदर्शन नहीं है, सौन्दर्य केवल शरीर नहीं है, सौन्दर्य एक जीवन-दृष्टि है जो स्वस्थ शरीर, शांत मन, मधुर वाणी, करुणामय व्यवहार प्रदान करता है।

नरक चतुर्दशी का भाव यही है कि अपने भीतर की नरकासुर रुपी आसुरी वृत्तियों को अपने विवेक, संयम, करुणा तथा सदाचार के प्रकाश से पराजित करना। अतः दीवावली के एक दिवस पूर्व नरक चतुर्दशी पर्व स्वयं को स्वच्छ करने के पश्चात संसार में स्वच्छता का विस्तार करने का पर्व है। इस दीक्षा को ग्रहण करने से साधक-साधिका के आंतरिक जीवन में निखारमय सुस्थितियों का विस्तार हो सकेगा तथा वे मंगल, सौभाग्य, सौन्दर्य, सम्मोहन, आकर्षण से परिपूर्ण हो सकेंगे।

शारीरिक, आंतरिक आकर्षण वृद्धि रुपोज्ज्वला दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648

न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460

Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490

आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।